



# आर्योदय



## ARYODAYE



Read Aryodaye on line -- [www.aryasabhamauritius.mu](http://www.aryasabhamauritius.mu)

Weekly Aryodaye No. 366

ARYA SABHA MAURITIUS

15th June to 22nd June 2017

LET US  
LOOK AT  
EVERYONE  
WITH A  
FRIENDLY  
EYE

- VEDA

### प्राणायाम मन्त्रः

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्॥

हे परमपिता परमात्मन् ! आप प्राणों से प्रिय, दुःख-विनाशक और सुखप्रदाता, आनन्दमय और आनन्ददाता, सर्वतो-महान् सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, दुष्टों को दण्ड देनेवाले, सदा एकरस, अखण्ड, अविनाशी और अपरिवर्तनशील हो ।

### Prāṇāyām Mantrāh - The Breathing Verse

**Om Bhūh. Om Bhuvah. Om Swah. Om Mahah. Om Janah. Om Tapah. Om Satyam.**

**Meaning of words :- Om** - the Protector, **Bhūh** - life giver, **Bhuvah** - reliever of pain, **Swah** - giver of happiness, **Mahah** - the greatest, **Janah** - the Creator, **Tapah** - He who punishes evil doers, **Satyam** - Truth.

**Purport :-** O God! You are the Giver of life, Reliever of pain and sorrows, Giver of happiness, Greatest of all, Creator of the Universe, who punish evildoers and are ultimately the truth.

**Explanation :-** This 'mantra' is recited to perform 'Prāṇāyām' -- the breathing exercise. In order to improve one's memory and concentration 'Prāṇāyām' -- deep breathing - is important. While reciting this 'mantra', we meditate on the various qualities of the Supreme Being. Besides being the Giver of life and happiness, He is the Destroyer of sorrows and suffering. We seek the grace of that Almighty Power who is also the Creator of the universe. He watches over every single action of ours. Consequently, He rewards or punishes us accordingly. He is the truth and All-knowing.

Dr O.N. Gangoo

### सम्पादकीय

॥ ओम् ॥  
सत्यार्थप्रकाशः  
Satyarth Prakash

## जन्म और मृत्यु

जन्म और मृत्यु परमात्मा की अटल व्यवस्था है। जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी हुई है। जिस दिन मनुष्य जन्म लेता है, मृत्यु उसी दिन से उसके साथ सफ़र करती है, क्योंकि जीव-मात्र के भविष्य में मृत्यु का संयोग लिखा है। जो भी प्राणी संसार में आया है, वह एक दिन अवश्य संसार छोड़कर जाएगा।

जीव अपने कर्मफल से संसार में जन्म लेता है। हर एक प्राणी के बुरे-भले कर्म ही जन्म का कारण है। जब तक कर्म करते रहेंगे, तब तक जन्म लेते रहेंगे। जन्म लेना मनुष्य के वश में नहीं है। हम अपने पूर्व जन्म के अच्छे-बुरे कर्मों के आधार पर आवागमन के चक्र में फँसे रहते हैं। पिछले जन्म के कर्मों को भोगने के लिए और इस जन्म में श्रेष्ठ, परोपकारिता तथा पुण्य कर्म करने के लिए यह जीवन मिला है।

हम आँख मूँदे हुए संसार में आते हैं और आँख बन्द करके दुनिया से बिदा हो जाते हैं। जनम-मरण के चक्कर में अनेक जन्मों तक भटकते रहते हैं। भौतिक बन्धनों में फँसकर भौतिकवादी बन जाते हैं और यह भूल जाते हैं कि मृत्यु चोरी-चोरी आती है और किसी को भी किसी समय ले जाती है क्योंकि मृत्यु सभी प्राणियों पर शासन करने वाली होती है।

जन्म तो जीवन का आरम्भ है, फिर ज़िंदगी की गाड़ी सुख-दुख झेलती हुई सफ़र करती है और जीवन की अंतिम घड़ी आ जाती है। मृत्यु से छूटने का कोई भी उपाय नहीं है। विश्व के सभी जीव मृत्यु की लाइन में हैं। दुनिया में आकर कितने लोग जा चुके हैं और कितने लोग जा रहे हैं। कितने लोग जाने वाले हैं। सब प्राणियों की जेब में मृत्यु का टिकट है, न जाने, कौन, कब कहाँ और कैसे बिछड़ जाए? हमारी मृत्यु कब होगी? कैसे होगी? - यह किसी को पता नहीं।

जन्म से ही मृत्यु का अटूट फँदा हमारे गले में पड़ा हुआ है। पता नहीं कब, किसको मृत्यु बुला ले। आज तक कोई भी जीव मृत्यु को जीत नहीं सका है, हर पल बिदाई की घड़ी है, न जाने कब जाना पड़े। अतः जीवन पर्यंत मृत्यु की तैयारी करती रहनी चाहिए।

संसार में सभी लोग मौत से डरते हैं। अपने प्राणों की रक्षा निमित्त अनेक प्रकार के उपाय ढूँढ़ते रहते हैं। हज़ारों, लाखों रुपये खर्च कर देते हैं। मृत्यु से छूटने के साधन खोजते रहते हैं फिर भी बच नहीं पाते हैं, क्योंकि यह परमात्मा का अटल नियम है। परमात्मा की पूरी व्यवस्था अनुसार हम पैदा होते हैं और दुनिया छोड़कर चले जाते हैं।

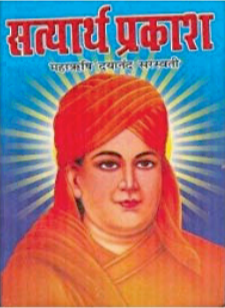
मृत्यु के भय से आदमी ईश्वर से प्रीति बढ़ाने लगता है; पाप, अपराध, अधर्म और कुकर्मों से हटकर प्रभु-भक्ति की ओर अग्रसर होता है, क्योंकि मृत्यु ही हमें चेतावनी देती है कि पाप न करो, यह भौतिक सुख-भोग सदा के लिए नहीं है।

जन्म और मृत्यु का बन्धन केवल मोक्ष की अवस्था में टूटता है। जब जन्म नहीं होगा तो मृत्यु भी नहीं होगी। मृत्यु नहीं होगी तो दुख, वियोग, क्लेश, पीड़ा आदि भी नहीं सताएँगे। इसीलिए यह बताया गया है कि जन्म का सम्बन्ध मृत्यु से है, परन्तु हमारा मुख्य उद्देश्य मोक्ष-प्राप्ति है। मुक्ति प्राप्त करने पर ही हम जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा पा सकते हैं।

योग, साधना और ध्यान द्वारा ईश्वर की सच्ची भक्ति करने से मन की मलिनता दूर हो जाती है। स्वच्छ मन तथा तीव्र बुद्धि से उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं। उत्तम विचारों से सुकर्म करके हम अपनी आत्मा को आनन्दित करते हैं। आत्मा और परमात्मा का अटूट सम्बन्ध स्थापित करने के लिए यज्ञ, महायज्ञों, वेदों के पठन-पाठन एवं धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए। श्रावणी महोत्सव के अवसर पर हम अपने समस्त आर्य परिवारों से निवेदन करते हैं कि आप भौतिक जगत् से आध्यात्मिक जगत् में पदार्पण करके मोक्ष-मार्गी बनने का भाग्य प्राप्त करें।

श्रावणी उपाकर्म महोत्सव हमारे लिए भक्तिमय और मंगलकारी हो।

बालचन्द्र तानाकूर



## सत्यार्थप्रकाश मास

डॉ० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न - प्रधान आर्यसभा

१२ जून को आर्यसभा भवन, पोर्टलुई में भारत से पधारे आचार्य विजय भूषण आर्य और श्रीमती डॉ० सुषमा आर्या जी के आचार्यत्व में दोपहर एक बजे एक राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका शुभारम्भ आर्यसभा के पुरोहित-पुरोहिताओं ने यज्ञ द्वारा किया। इसके पश्चात् भजन-भाषण प्रस्तुत किये गए।

हम अपने सुधी पाठकों को स्मरण दिलाना चाहते हैं कि सन् १९९८ में आर्य सभा ने 'मॉरीशस में सत्यार्थप्रकाश आगमन-शती-समारोह' मनाने के लिए मॉरीशस स्थित 'महात्मा गांधी संस्थान' के भव्य सभागार में कुरुक्षेत्र निवासी प्रसिद्ध आर्य विद्वान्, प्रोफ़ेसर रामप्रकाश की अध्यक्षता में एक तृदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का शानदार आयोजन किया था, जिसमें भाग लेने के लिए 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के तत्कालीन प्रधान श्री बन्देमातरम् एवं महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शर्मा जी ने अपनी उपस्थिति दी थी। दक्षिण अफ्रीका, होलैण्ड, इंग्लैण्ड, कैनाडा आदि देशों से कई विद्वानों और विदुषियों ने सम्मिलित होकर सत्यार्थप्रकाश पर अपना-अपना आलेख प्रस्तुत किया था।

उस आर्य महासम्मेलन के दिन से आज तक आर्यसभा मॉरीशस ने 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रचार-प्रसार में कोई कोर कसर बाक़ी नहीं छोड़ी। सम्भवतः विश्व में एक ही ऐसा देश होगा, जो प्रतिवर्ष जून महीने में 'सत्यार्थप्रकाश मास' मनाता है। विज्ञ जनों को विदित है कि १२ जून को महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन प्रारम्भ किया था। इस मास को मॉरीशसीय आर्यसमाज ने वर्षों से 'सत्यार्थप्रकाश मास' घोषित किया हुआ है। इस महीने में तीसों दिन इस महान् ग्रन्थ का धुआँधार प्रचार होता है। पहली जून से लेकर तीस जून तक आर्य सभा अपनी चार सौ शाखा

समाजों में सत्यार्थप्रकाश पर विशेष सत्संगों, संगोष्ठियों, प्रवचनों आदि का आयोजन करती है। प्रतिदिन प्रातःकाल में मॉरीशसीय रेडियो से सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न सम्मुल्लासों पर विशेष सन्देश प्रसारित होता है। स्कूल-कॉलिजों में पैम्फ़लेट, पुस्तिका आदि के माध्यम से बच्चों को सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाओं से अवगत कराया जाता है। हिन्दी, अंग्रेज़ी और फ्रेंच में छपे सत्यार्थप्रकाश की खूब बिक्री की जाती है। सत्यार्थप्रकाश के पठन-पाठन पर इस जून मास में विशेष बल दिया जाता है।

इस वर्ष हमारे देश के प्रत्येक ज़िले में सत्यार्थप्रकाश पर विशेष व्याख्यान देने का प्रबन्ध किया गया है। जून मास के प्रथम दो सप्ताहों के सत्यार्थप्रकाश पर दिये गये व्याख्यानों की सूची आर्योदय पर प्रकाशित हो गई है। शेष कार्यक्रम इस प्रकार हैं -

#### Moka Arya Zila Parishad

Date	Time	Venue
(Every Tuesday)	1.00 p.m.	Petit Verger A.M.S.
18 June	7.30 a.m.	Bois Cheri Rd, Moka A.S.
20 June	2.00 p.m.	Lower Dagotiere A.M.S.
22 June	3.00 p.m.	Lower Dagotiere A.S.
24 June	--	Lassurance Dagotiere A.S.

#### Grand Port Arya Zila Parishad

Date	Time	Venue
9 June	3.30 p.m.	Carreau Esnouf A.S.
11 June	3.30 p.m.	Plaine Magnien A.S.
9&10, June	2.30 p.m.	La Sourdine, L'escalier A.S.
11 June	8.30 a.m.	" "
16 June	4.00 p.m.	Beau Vallon A.S.
18 June	3.30 p.m.	Trois Boutiques U. Vale A.S.
18 June	9.30 a.m.	Camp Carol A.S.

#### Flacq Arya Zila Parishad

Date & Time	Venue
Ten Days Pravachan	Camp Accasia Arya Mandir
	Poste de Flacq

शेष भाग पृष्ठ २ पर

## केशव चन्द्र सेन और स्वामी दयानन्द

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा



स्वामी जी के बंगाल प्रवासकाल में जो परिवर्तन आया, वह एक नया मोड़ ला दिया। मथुरा की पाठशाला छोड़ने से अगले १० वर्षों में कभी नहीं हुआ था।

जब स्वामी जी कलकत्ता पहुँचे तो केशवचन्द्र सेन कहीं बाहर गए हुए थे। जब वे घर लौटे तो स्वामी जी का समाचार सुना। वे तुरन्त स्वामी जी से मिलने आये, परन्तु अपना परिचय न दिया। बातचीत करते हुए बीच में पूछा क्या आप कभी केशवचन्द्र से मिले। स्वामी जी ने उत्तर देते हुए कहा, 'हाँ मिले हैं'। 'आप उनसे कब मिले' स्वामी जी ने उत्तर दिया, 'अभी'। सेन साहब चकित रह गए। फिर सेन ने पूछा कि, 'यह आपने कैसे जाना कि मैं ही केशवचन्द्र हूँ?' स्वामी जी ने उत्तर दिया कि 'जैसी बातें आपने की हैं, वैसी किसी दूसरे से नहीं हो सकती।' इस घटना के बाद दोनों में लम्बे समय तक बातें हुईं। कितनी बार केशव बाबू - स्वामी जी के उपदेश सुनने जाते रहे।

एक दूसरे दिन केशव ने कहा, 'दुख वा शोक की बात है कि वेदों का अद्वितीय विद्वान् को अंग्रेज़ी नहीं आती, अन्यथा इंग्लैण्ड जाते समय वह मेरा इच्छानुकूल साथी होता।' स्वामी जी ने उत्तर दिया, 'शोक की बात है कि ब्रह्म का नेता संस्कृत नहीं जानता। यदि जानता तो लोगों को उपदेश देता।' वही केशवचन्द्र ने स्वामी जी को हिन्दी में उपदेश देने को कहा था। स्वामी

जी ने हिन्दी खड़ी बोली में न केवल उपदेश देना आरम्भ किया, बल्कि लगभग एक वर्ष बाद खड़ी बोली-हिन्दी में ग्रन्थ लिखवाना भी आरम्भ किया था। इससे पहले संस्कृत में ही व्याख्यान देते थे।

इसके अलावा उसी सेन महोदय ने स्वामी जी से पूरे शरीर ढंकने की माँग की थी। इसे भी स्वामी जी ने ध्यान दिया था, क्योंकि आपको मालूम होगा कि कलकत्ता जाते हुए, स्वामी जी केवल कौपीन मात्र रखते थे। इसलिए व्याख्यान में महिलाओं को आमंत्रित नहीं करते थे। जब लिबास बदल दिया तो सभा में सुनने के लिए बहनें भी आने लगी थीं।

यह बात भी कम महत्व की नहीं कि अपने विचारों को फैलाने याने प्रसारित करने के लिए एक संगठन स्थापित करने का विचार स्वामी जी के उर्वरा मस्तिष्क में उत्पन्न हो गया था, जिसको कार्यरूप दिया १८७४ में सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन करके और १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना द्वारा। स्वामी जी वेदों के अनुसार जहाँ से भी उत्तम विचार प्राप्त हो, 'ले लेना चाहिए' - के मानने वाले थे।

**'आनोभद्रा कृतवोयन्तु.....'**

*Let noble thoughts come to us from every side.*

इसी विचार को दृढ़ता प्रदान की जब स्वामी जी ने १८७७ में लाहौर में बैठकर २८ नियमों में से छोटकर १० नियम निश्चित किये तो चौथा नियम बनाया, 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' कलकत्ता प्रवास के दौरान केवल स्वामी जी प्रभावित न हुए, बल्कि कलकत्ता के मूर्धन्य चिंतक भी जिनमें केशव बाबू थे प्रभावित हुए थे। भविष्य में कभी हम ज़रूर लिखेंगे।

## लोवर प्लेन विल्येम्स में मासिक संगोष्ठी यज्ञ

पंडिता प्रियंवदा गुमानी दुखी, आर्य

आर्य सभा मॉरीशस के तत्वावधान में एवं प्लेन विल्येम्स आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से शुक्रवार ता० २८ अप्रैल २०१७ ई० को सायंकाल चार से छः बजे तक ओल्ड-मोका रोड बेलरोज़ के आर्यसमाज एवं आर्य महिला समाज के सहयोग से मासिक संगोष्ठी यज्ञ हुआ। वरिष्ठ पुरोहित पण्डित जीवन महादेव आर्य जी के नेतृत्व में एवं अन्य पंडिताओं और पंडितों द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् संगठन के प्रधान श्रीमान् सोनालाल रामदोस जी का स्वागत भाषण हुआ। वरिष्ठ पंडित महादेव जी द्वारा सन्देश प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि हम अपने परिवारों को गठित करके रखना, बच्चों को छोटी-छोटी कहानियों के द्वारा संस्कारित करें। बेल रोज़ आर्य महिला समाज की प्रधाना श्रीमती अमृता सिरतन जी द्वारा सभी का स्वागत किया गया। इसके बाद आर्य ज़िला परिषद् के प्रधान श्रीमान् रवीन्द्रसिंह गौड जी द्वारा 'Astronomy विज्ञान' पर सविस्तार प्रकाश डाला गया। महिलाओं द्वारा सुन्दर भजन भी हुए।

उक्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो० सुदर्शन जगोसर जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि थे। उन्होंने बड़े गम्भीर और रोचक विषय पर अपना व्याख्यान दिया, जिसमें महर्षि दयानन्द जी के जीवन वृत्त पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया। इसके पश्चात् प्लेनविल्येम्स आर्य भजन मण्डली द्वारा दो भजन हुए। अन्त में श्रीमान् हरिश्चन्द्र दिरपोल जी द्वारा धन्यवाद समर्पित किया गया, फिर

पुरोहितों-पुरोहिताओं द्वारा शान्ति-पाठ हुआ। अन्त में जलपान और मिठाई से सभी का सत्कार किया गया।

यह आर्य संगठन तेरह मार्च दो हज़ार आठ (१३.०३.२००८) ई० में त्रेफ़ आर्यसमाज मंदिर में स्थापित हुआ था। श्रीमान् सोनालाल रामदोस जी प्रधान और मंत्रिणी पंडिता श्रीमती सत्यावती पेलाद्वा जी रहीं, और श्रीमान् तीमन बोलोराम जी कोषाध्यक्ष के रूप में नियुक्त हुए थे। सदस्य निम्न प्रकार से हुए - श्रीमती प्रियंवदा गुमानी दुखी जी, श्रीमती जयवन्ती रामरेखा जी, श्रीमती देवरानी सिरतन जी, श्रीमती निर्मला हलकोरी जी, श्रीमती शान्ता बेचू जी, श्रीमान् देवदत्त मित्तु जी, श्रीमती वि० बेचू जी, श्रीमान् इन्द्रजीत रामरेखा जी, श्रीमान् नारायण ओखजी जी, श्री मोहनदत्त कोनहाय जी, श्री मूलशंकर सिबोरत जी, श्री हरिश्चन्द्र दीरपोल जी, आदि। शुरुआत में यह संगठन इन-इन आर्यसमाजों से आरम्भ हुआ :- त्रेफ़, स्तेनले, ओल्डे, ओल्ड मोका रोड, विरजानन्द अविन्यू बेलरोज़ और पायोत आर्यसमाज। आज २०१७ में लगभग दस से बारह आर्यसमाज और आर्य महिला समाज इस संगठन में चार-चौद लगा रहे हैं। इन संगठित समाजों का हर मास में एक बार किसी-न-किसी समाज में यज्ञ होता है। उद्देश्य यह होता है कि इतने समाज मिलकर गठित होना और एक परिवार की तरह हम अपने विचारों का अदान-प्रदान कर अपना प्रेम बाँटना।

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ १ का शेष भाग

Date : Thurs 15 to Fri. 23 June 2017  
Time : 6.30 p.m. to 9.00 p.m.  
Saturday 24 June - 3.00 p.m. to 6.30p.m.  
Programme - 6.30 p.m. - Yajna, Bhajan-Kirtan&Sandesh  
7.50 p.m. - Pravachan - Vote of thanks, Aarti & Shanti Path

15/6 - 1 Chp. - Shri Prabhakar Jeewooth  
16/6 - 2 Chp. - Pt. Dhaneshwar Ramsarran  
17/6 - 3 Chp. - Pta. Satyabhama Domun, Arya Bhushan

18/6 - 4 Chp. - Smt. Dhanwantee Ramchurn,MSK,Arya Ratna

19/6 - 5 Chp. - Pt. Dayanand Thosadu Ramdu  
20/6 - 6 Chp. - Pt. Soomandev Sooknauth  
21/6 - 7 Chp. - Pt. Gianduth Toolooa  
22/6 - 8 Chp. - Pt. Shivsungkur Ramkhalawon

23/6 - 9 Chp. - Shri Satyadeo Peerthum, OSK,Arya Bhushan

24/6 -10 Chp. - Dr Oudaye Narain Gangoo,Ph.D,GOSK,Arya Ratna  
Poste de Flacq, La Forge Arya Samaj

Branch No. 131

Alle Cocos Arya Samaj No. 419  
La Gare Arya Samaj No. 349  
Camp Raffia Arya Mahila Samaj No. 275  
La Porte Arya Samaj No. 286  
Accassia Arya Samaj No. 244  
Accassia Arya Mahila Samaj No. 416  
Choisy Arya Samaj No. 157  
Choisy Arya Mahila Samaj No. 130  
Pont Blanc Arya Samaj No. 361  
Pont Blanc Arya Mahila Samaj No. 112

**Plaine Wilhems Arya Zila Parishad**

21/06 15:30 Sangram A.M.S Ballgobeen Ashram  
22/06 17:00 Hermitage A.S/A.M.S  
24/06 15:30 Brahmashram Arsha Gurukul, Sangram Bhawan, St Paul.

25/06 09:00 15 Cantons A.S/A.M.S

25/06 14:00 Solferino A.M.S

28/06 19:00 Sangram Bhawan

30/06 19:00 Dhuny-lane Arya Samaj

19/07 14:00 Plaines Wilhems A.Z. Parishad -- Olier Arya Samaj

## सत्यार्थप्रकाश मास के सन्दर्भ में

श्रीमती कीर्ति देवी रामजतन, व्याख्याता, महात्मा गांधी संस्थान

क्या वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था आज के समाज के लिए उपयुक्त है ?

इस प्रश्न का मुख्य शब्द है 'वर्णाश्रम' जो 'वर्ण' और 'आश्रम' शब्दों से निर्मित है। 'वर्ण' का एक अर्थ है 'रंग' और दूसरा 'वृ वर्ण' अर्थात् जिस कार्य को व्यक्ति चयन करता है अपने गुण, कर्म, स्वभावानुसार और 'श्रम' शब्द में 'आ' उपसर्ग के लगने से 'आश्रम' शब्द की उत्पत्ति हुई, जिससे तात्पर्य है - जीवन पर्यन्त निरन्तर परिश्रम करना।

आत्मा और परमात्मा दो ही चेतन हैं। सर्वज्ञ होने से परमात्मा जन्म-मरण के जंजाल में नहीं आता, जबकि आत्मा कर्मों के आधार पर विभिन्न योनियों में जाती है। मानव से इतर अन्य योनियाँ मात्र भोग योनि हैं।

वैदिक सिद्धांत के अनुसार जब मनुष्य का यज्ञोपवीत संस्कार होता है, तब वहाँ से वह ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश करता है। पूर्ण अध्ययन के पश्चात् आचार्यों के निर्देशानुसार वर्ण-व्यवस्था को अपनाता है, अर्थात् अपने गुण, कर्म एवं स्वभाव के अनुसार ही वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र कहलाता है।

जिस प्रकार जो सत्य होता है, चाहे वह भूतकाल में हो या वर्तमान में या फिर भविष्य में, सत्य अन्ततः सत्य ही रहता है, उसके स्वरूप मात्र में किंचित् परिवर्तन आ जाता है, ठीक उसी प्रकार यह जो वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था है, आज के समाज के लिए उतना ही उपयुक्त है, जितना प्राचीन काल में हुआ करता था। मात्र देश, काल परिस्थिति अनुसार, आधुनिक सामाजिक व्यवस्था अनुरूप उसके स्वरूप में कुछ परिवर्तन आ गये हैं।

प्राचीन काल की शिक्षण-पद्धति अलग थी, फिर भी विद्वानों को नकारा नहीं जा सकता, वैज्ञानिकों आदि की विद्वत्ता को अस्वीकारा नहीं जा सकता। अतः प्रमुख रूप से ज्ञान के क्षेत्र में जो सर्वाधिक प्रतिष्ठित वर्ग है, उसकी गणना ब्राह्मण वर्ग में कर सकते हैं, क्योंकि कहा गया है - 'ब्राह्मणोरस्य मुखमासीत्' अर्थात् जो ज्ञान से भरपूर हो, वह ब्राह्मण कहलाने योग्य है और इस वर्ग को मानव शरीर के मुख से उपमित किया जाता है।

आगे व्यक्त किया गया है - 'बाहू राजन्यः कृतः' - अर्थात् जिस प्रकार समाज,

राष्ट्र को व्यवस्थित रखने हेतु बल की, दण्ड की आवश्यकता सर्वथा उचित है, उसी प्रकार व्यक्ति व शक्ति को सुरक्षित रखने हेतु क्षत्रिय की आवश्यकता है और इस शारीरिक बल को, जिसे बाँहों की उपमा दी गई है, उसका प्रयोग सदैव उचित दिशा में करना चाहिए न कि विनाश के लिए।

अतः आज के परिप्रेक्ष्य में भी शक्ति की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी प्राचीन काल में हुआ करती थी। बिना सैनिक वर्ग के, समाज अथवा देश में शान्ति बनाए रखना सम्भव नहीं।

जो वर्ग व्यवसाय के क्षेत्र में रुचि रखता हो, जहाँ पर व्यवसायी मात्र लेन-देन तक सीमित न रहकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक इस व्यवसायिक कार्य को अग्रसित करते हैं, उनकी गणना वैश्यों के वर्ग में की जाती है और इनको उरु से उपमित किया गया है - 'उरु तदस्य यद् वैश्यः' तथा जितना भी कार्य शेष रह जाता है, साथ ही इन तीनों उपर्युक्त वर्गों की सेवा निमित्त कार्य करने का उत्तरदायित्व शूद्रों के कंधों पर आ जाता है, जो जाति से शूद्र नहीं होते वरन् अपने कार्यों से शूद्र बनते हैं। अन्य वर्णों की सेवा करते हुए यदि कोई शूद्र उनके संस्कार को अपना लेता है तो वह भी ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य बन सकता है। अर्थात् वह धीरे-धीरे आगे बढ़ सकता है। जिस प्रकार पैरहीन व्यक्ति सभी कार्यों को करने में असमर्थ हो जाता है, क्योंकि वह चल नहीं पाता, उसी प्रकार सच्चे शूद्रों व सेवकों के बिना मानव समाज का गुज़ारा नहीं हो सकता। इसीलिए शूद्रों के लिए कहा गया है - 'पद्भ्यां शूद्रो अजायत'।

वरतुतः आधुनिक समाज में भी वर्ण-व्यवस्था का औचित्य उतना ही सार्थक है, जितना पूर्व में हुआ करता था।

अब हम झाँकी लगाते हैं, आश्रम व्यवस्था की ओर। वर्ण-व्यवस्था का पालन करते हुए ही प्राचीन काल में मनुष्य आश्रम व्यवस्था के अंदर भी जीवन व्यतीत करता था। अर्थात् व्यावहारिक जीवन ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास का भी पालन करता था; किन्तु आजकल परिस्थिति, सामाजिक परिवर्तन आदि के कारण यह व्यवस्था मात्र ब्रह्मचर्य और गृहस्थ तक सीमित रह गया है। बिरले ही कोई वानप्रस्थ या संन्यास की ओर कदम बढ़ाता है।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

## वृद्ध

पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

हरेक स्तर के वर्ग और वर्ण के वृद्धों के पास अपने-अपने जीवन के अनुभव होते हैं। प्रायः लोग जब देह से बूढ़े हो जाते हैं, तब उनमें बहुत से लोग अपने ही जीवन की बहुत-सी बातें भूल जाते हैं। वे बच्चों के आगे कभी बच्चे बन जाते हैं। बहुतेरे वृद्ध वर्तमान के टेक्नोलोजी युग को समझ नहीं पाते हैं। जैसे-जैसे बुढ़ापा छाता जाता है। थोड़े वृद्ध अनजान संसार में जीने लगते हैं। यदि सारी सुविधाओं से जीवन बिताने वाले होते हैं, तो वे पाप को भी धर्म मानने लगते हैं।

वे मानवता पर अच्छे सम्मतिदाता नहीं हो पाते हैं। वे परंपरागत थोड़ी बातों को अपने दिमाग में अर्थहीन बनाए रखते हैं। आज बड़ों और छोटों के बीच बहुत-सी मर्यादाएँ बदल गई हैं। अब उस बदले रूप में ही उसे शुद्ध बनाए रखना है। हम पुराने लकीर के फ़कीर बने तो रह नहीं सकते। अतः कभी वे अपनी बात न बोल पाने के योग्य बनते जाते हैं।

मैंने अपने बचपन से देखा है कि जो लोग हमेशा से सत्संग प्रेमी होते हैं, वे ही वृद्ध समझदार होते हैं। वे लोग हर समय अपने को सबसे अलग रखते हैं। देश में गरीबी के बीते दिनों में जितने अच्छे काम करने होते थे, कहीं शादी-ब्याह की बात करनी होती थी, तो सभी लोग उन सत्संगी वृद्धों पर ही विश्वास करते थे। वे थोड़े संयमी होते थे, उन लोगों के जीवन में कोई नियम होता था। वे बेबूझ-सा होकर जीने नहीं लगते थे। शायद इसी कारण लोग उन लोगों को बड़ा मानते थे।

बुढ़ापे में ही कितनों को भूलने की बीमारी पीछा करने लग जाती है। उनके बच्चे कहने लगते हैं - ये तो बच्चे बन गए हैं। इन दिनों सब कुछ भूलकर कहीं खो जाने की बीमारी आ गई है। Alzheimer नाम का रोग उत्पन्न हो गया है। बीमारी का नाम पड़ जाने से अब तो जवानों-अधेड़ों आदि को भी यह बीमारी पीछा करने लगी है। सब कुछ भूलकर किसी सूर में खो जाना। ऐसे लोगों को अकेले छोड़ा जा नहीं पाता है। आजकल जानकर लोग भी मदद कर नहीं पाते। शक्की लोग व्यर्थ में शक करते हैं। इस धक्कापेल संसार में उस दिमाग के खोए व्यक्ति को खो जाने या मर-मिटने का भय सताता है। परिवार में जो व्यक्ति इस बीमारी का शिकार होता है, वह घर के लोगों के लिए समस्या बन जाता है।

उन लोगों की हालत देखकर हमें केवल तरस ही नहीं आता, अपितु अपने में डर लग जाता है कि कल कहीं हम भी इस बीमारी का शिकार न हो जाएँगे। यदि हम ऐसा हो गए तो हमारा क्या होगा? भगवान् से प्रार्थना है कि हे भगवान्। इस बीमारी का शिकार ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के विरुद्ध हम न हों। नवजवान जिस उड़ान में है, उन लोगों को समझाना तो मुश्किल है, पर वृद्धों से बात की जा सकती है।

जितने वृद्ध किसी भी भाषा अर्थात् चाहे केवल अपनी मातृ-भाषा ही पढ़ लेते हों, तो वे अपनी रुचि की धार्मिक पुस्तक अवश्य ही नियम से रोज़ पढ़ते रहने वाले बन जाते हैं। अनपढ़ लोग कहीं भी सत्संग में उठ-बैठ की आदत बनाए रखें।

निम्न विषयों पर व्यर्थ में सोचते रहने की आदत न बनावें। आप को कुछ नहीं होगा। कर्मफल सिद्धान्त के अनुकूल नहीं, आप अपने बारे में, अपने भविष्य के बारे में, परिवार के बारे में, बाल-बच्चों के बारे में, जीवन की उलझनों के बारे में सिर थकाते मत रहना। बहुत सोचते रहने और अपनी सोच का हल न मिलने से यह बीमारी बड़ी जल्दी से आ जाती है।

किसी देश के कार्यरत वृद्ध प्रधान-मन्त्री को भगवान् करे कि यह बीमारी न लगे। नहीं तो वे इस भूलौनी की आड़ में बहुत कुछ न कर सकने पर बहुत कुछ गलत भी कर सकते हैं। जिम्बाबुए में मुगाबे तो बुढ़ापे में भी थमे हैं। ये लोग भूलौनी की बीमारी से मुक्त हैं। महारानी एलिजाबेथ नब्बे वर्ष की आयु में कार्यरत हैं। उनका पति पंचानबे में अपने पद निभा पा रहे हैं। इन बड़ों को भगवान् स्वयं सहायता करते रहते हैं।

जब सभी वृद्ध भूलते नहीं तो जो लोग भूलते हैं, वे लोग सच ही किसी बीमारी का शिकार होते हैं। नोटरी में यह कानून सुनाया जाता है, इतनी उम्र के हो जाने पर किसी धन अर्थात् पैसे या मिट्टी आदि के पर्चों पर वृद्धों के हस्ताक्षर करने से पहले किसी सिर रखने वाले अपने परिवार के जवान को साक्षी में लेना चाहिए। पर्चे पर लिखा होना चाहिए कि अमुक वृद्ध ने अपने होशोहवास में यह बँटवारा किया है। इस कानून की बुनियाद पर इज़्जत से सालों पहले किए गए बँटवारे को अनुचित घोषित किया जा पाता है। इस कानून ने भूलौनी की बीमारी के न भी आने पर वृद्धों पर तो पहले ही से हमला बोल दिया है।

### पृष्ठ २ का शेष भाग

ये चार आश्रम भी उपयुक्त ही हैं, किन्तु प्रत्येक स्थान पर इनकी सार्थकता सिद्ध नहीं की जा सकती। भारत ही में यदि देखा जाए तो बिरले ही कुछ व्यक्ति मिलेंगे जो वैराग्य प्राप्त हेतु वनों में जाते हैं। अधिकतर तो आश्रमों में ही रहकर वानप्रस्थियों का जीवन व्यतीत करते हैं। और अन्ततः संन्यास धारण करते हैं। जबकि मॉरीशसीय परिप्रेक्ष्य में तो इस प्रकार की भी कोई व्यवस्था नहीं है, जहाँ पर व्यक्ति इन दो अन्तिम आश्रमों के नियमों का यथावत् पालन कर सकें। शास्त्रों द्वारा निर्दिष्ट यहाँ पर गुरुकुलीय पद्धति की भी व्यवस्था नहीं है।

इसीलिए यदि समग्र रूप से देखा जाए, तो यही द्रष्टव्य होगा कि आश्रम व्यवस्था मुख्यतः ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थ तक सीमित रह गयी है।

अन्त तो गत्वा यह कहना समीचीन होगा कि संपूर्णतः संसार के अन्दर शान्ति बनाए रखने हेतु शास्त्र-निर्दिष्ट आश्रम एवं वर्ण-व्यवस्था आज के इस वर्तमान समाज में स्वीकारणीय है, किन्तु प्रत्येक देश-काल-परिस्थिति के वैविध्य के कारण मात्र वर्ण-व्यवस्था के औचित्य को ही आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पूर्णरूपेण सिद्ध किया जा सकता है, जबकि आश्रम-व्यवस्था को प्रायशः गृहस्थ आश्रम तक सीमित बताया जा सकता है।

## आर्या वीराङ्गणाओं की स्मृति में

पंडिता लीलामणि करीमन, वाचस्पति



गत वर्ष २७-२८ जून २०१६ ई० को आर्या पण्डिता तारामती (प्रचलित नाम बसन्ती) भामा की मृत्यु अचानक रोगग्रस्त हो जाने से हुई। इस मृत्यु से भामा परिवार के साथ नुवेल-दे-

कुर्वेत गाँव एवं आस-पास के शाखा-समाजों, आर्य महिला मण्डल एवं आर्य सभा मॉरीशस को भारी क्षति पहुँची। पण्डिता जी की मृत्यु (६७) सरसठ साल की आयु में हुई। उन्होंने अपना पूरा जीवन आर्यसमाज के सेवा-कार्य तथा हिन्दी-शिक्षण में निष्ठावर कर दिया। वे निष्काम कर्म करते हुए आर्य महिला समाजों का निर्माण एवं संचालन हेतु यज्ञ, महायज्ञ, सत्संग आदि के साथ-साथ महिलाओं को संध्या-हवन सिखाती रहीं। विद्यार्थियों को हिन्दी-संस्कृत भाषाओं के साथ धार्मिक शिक्षा एवं मन्त्र-पाठ कराती रहीं। ऐसी वीराङ्गणा को खोकर हम सभी को अत्यन्त दुख हुआ। जाते-जाते वे आर्यसमाज का नाम और अपना नाम भी अमर कर गईं।

गत रविवार प्रायः उनकी मृत्यु के ग्यारह महीने बाद, अर्थात् २१ मई सन् २०१७ ई० को नुवेल-दे-कुर्वेत आर्यसमाज और महिला समाज की ओर से मॉरीशस आर्य महिला मण्डल एवं आर्य सभा मॉरीशस के तत्वावधान में शाम के दो बजे से चार बजे तक का एक भव्य कार्य स्थानीय आर्यसमाज के भवन में सम्पन्न हुआ। इस यजन कार्य के दो उद्देश्य रहे- (१) स्वर्गीय पंडिता तारामती भामा की स्मृति में नुवेल-दे-कुर्वेत आर्यसमाज की यज्ञशाला का पुनः नामकरण - 'पंडिता तारामती भामा यज्ञशाला'।

(२) महान् आर्य सेवक डॉ० चिरंजीव भारद्वाज की धर्म-पत्नी श्रीमती सुमंगली देवी की स्मृति सभा।

कार्य की शोभा बढ़ाने के लिए निम्नलिखित महानुभावों ने अपना अमूल्य समय निकालकर सभागार में उपस्थिति दी, यथा - जगह-जगह से आए हुए पंडित-पंडितागण, शिक्षा-मन्त्री माननीया

श्रीमती लीलादेवी दुखन लच्छुमन, सूचना संचार प्रौद्योगिकी मंत्री (ICT) माननीय योगिदा सोमीनादेन, मॉरीशस आर्य सभा के प्रधान - डॉ० उदयनारायण गंगू जी, जी.ओ.एस.के, आर्यरत्न, वेद प्रचार समिति के प्रधान एवं आर्यसभा के उपप्रधान श्री बालचन्द तानाकूर, महिला मण्डल की प्रधाना एवं आर्यसभा की उपप्रधाना - श्रीमती धनवन्ती रामचरण, एम.एस.के, आर्य रत्न, कोषाध्यक्ष आर्य सभा, श्री रवीन्द्रसिंह गौड़, आर्य भूषण, अन्तरंग कमेटी के अन्य कर्मठ सदस्य-सदस्याएँ, गण्यमान्य अतिथि गण विभिन्न शाखा-समाजों के प्रतिनिधि एवं सदस्य-सदस्याएँ।

नुवेल-दे-कुर्वेत के दोनों समाजों - पुरुष समाज और महिला समाज के पदाधिकारी गण एवं सदस्य-सदस्याएँ तथा पाठशाला के विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से इस भव्य कार्य में अपना सहयोग प्रदान किया।

समारोह का दूसरा उद्देश्य था - श्रीमती सुमंगली देवी आर्या के नाम स्मृति सभा लगाना। ध्यान देने की बात यह थी कि जो कार्य सौ साल पहले श्रीमती सुमंगली देवी ने आरम्भ किया था; अर्थात् लड़कियों व नारियों को शिक्षा दिलाना, वह कार्य व उनका प्रयत्न आज सौ साल बाद पूर्ण रूप से फलीभूत हो रहा है। आज सभागार में अनेक पंडिताएँ उपस्थित हैं। विशेष उपलब्धि तो यह है कि शिक्षा-मन्त्री, विधान सभा की अध्यक्ष (Speaker) तथा राष्ट्रपति-देश की मूर्धन्या के रूप में कार्यभार भली-भाँति सम्भाल रही हैं।

इस प्रकार हमारे सभी मान्य अतिथियों द्वारा 'स्वर्गीय पंडिता तारामती भामा' से यज्ञशाला के नामकरण एवं उनके सराहनीय कार्यों के उल्लेख द्वारा एवं श्रीमती सुमंगली देवी आर्या के अथक-अविरल परिश्रमों की भूरि-भूरि प्रशंसा के द्वारा कार्य सम्पन्न हुआ।

पंडिताओं के भजनों से कार्य की शोभा में चार चाँद लग गए।

इस प्रशंसनीय कार्य के लिए भामा परिवार की ओर से मॉरीशस आर्य सभा एवं अन्य सभी जुड़े हुए समाजों एवं आर्य परिवारों को कोटि-कोटि धन्यवाद।

## प्राकृतिक-यौगिक विधि से दूर करें मोटापा

विनय सितिजोरी, प्राकृतिक चिकित्सक

### मोटापे के प्रमुख कारण -

आनुवंशिक, जंक फूड, खाद्य पदार्थों की लत, ऊर्जा संतुलन की कमी, शारीरिक श्रम का अभाव, हाइपो थायरॉयडिज्म, कुशिंग सिंड्रोम, फ्रिज़ में रखे हुए भोजन का ज्यादा प्रयोग, व्यायाम न करना।

### कुछ घरेलू उपचार -

नींबू का रस एवं शहद को गुनगुने पानी में लेने से वज़न कम होता है।

गोभी भी मोटापे के लिए बहुत फ़ायदेमंद है, इसमें Tartaric Acid पाया जाता है। जो बसा में चीनी व कार्बोहाईड्रेट्स के रूपांतरण को रोकता है, जिससे वज़न नहीं बढ़ता।

बेर (Masson) के पत्ते भी वज़न कम करने में महत्वपूर्ण है। इसकी दस-बारह पत्तियाँ रात में एक गिलास पानी में भिगो दें, सुबह खाली पेट पी लें।

ग्रीन टी (Green Tea) भी वज़न नियंत्रित करने में सहायक होता है।

शहद में ताज़ा अदरक के रस को मिलाकर पीने से भी वज़न कम होता है। एक कप गुण-गुणे पानी में तुलसी का रस मिलाकर लेने से फ़ायदा होता है। एक

चमच दालचीनी के पावडर पानी के साथ सुबह और शाम खाली पेट लेने से भी वज़न कम होता है।

### आहार और दिनचर्या -

सुबह जल्दी उठना, - सुबह उठकर गुनगुने पानी में नींबू निचोड़ कर, शहद मिलाकर लेना, - प्रतिदिन उठकर सैर करें - प्रातःकाल का भ्रमण, - नाश्ते में मलाई निकाला हुआ दूध व गेहूँ (dublé) व चने के स्प्राउट - (sprout) भीगे व अंकुरित संतरे का रस या गाजर + कद्दू का रस भी ले सकते हैं, दोपहर के भोजन में Green सलाद, ककड़ी, गाजर, गोभी, चुकंदर, Lettuce, जलकुम्भी (cresson), टमाटर, प्याज़, खीरा लें, - शाम को सब्जियों का सूप, - रात्रि में हलका भोजन ग्रहण करें, - दोपहर के भोजन व रात्रि के खाने का समय निर्धारित करें।

### मोटापे में योग एवं प्राणायाम :-

ताड़ासन, त्रिकोणासन, कोणासन, पादहस्तासन, चक्की आसन, स्थिति कोणासन, पश्चिमोतानासन, भुजंगासन, शलभासन, अर्ध-हलासन, पादवृत्तानासन, शवासन, भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम विलोम, भ्रमरी, उज्जयी, उद्गीय प्राणायाम आदि।

## Bonne Mère Arya Samaj Centenary Celebrations a success

by Dr Indradev Bholah Indranath, P.B.H.

“Society itself is an accident to the spirit and if society in any of its form is to be justified morally it must be justified at the bar of individual conscience.”

-- George Santayana

The last special issue of Aryodaye cum Youth Magazine was very impressive containing four interesting articles contributed by Dr. Oudaye Narain Gangoo, Pt. Tosadu Ramdu, Pt. Rajmun Ramsaha and Mrs Dhanwantee Ramchurn on the centenary celebrations of Bonne Mère Arya Samaj. Tracing out about the social evolution of that time, homage has rightly been paid to the founders of the society and to the Arya Samaj preachers who had left no stone unturned for the advancement of the movement and for disseminating the Vedic principles.

The full page photo on the inside front cover of the magazine is striking as it shows the sugar cane leaf thatched building of that time and the founders of the society. The members were well determined and farsighted for having established the Arya Samaj 100 years ago. In spite of the fierce opposition by the Sanatanists to carry out the Vedic mission 150 members were enrolled. Establishing the Arya Samaj in 1917 in a small village and less populated area in Flacq district is indeed historical. Hats off to those founders of Bonne Mère Arya Samaj! We bow to them in their respect.

Personally to my retrospection, I have a good remembrance of Hindi teaching in the pathshāla (Hindi School) run by the Bonne Mère Arya Samaj. Around 1965, I regularly visited the pathshāla for inspection and the conduct of the end year examinations. In 1963, I was appointed inspector and examiner by the Vidya Samiti of Arya Sabha of which the Secretary was of the then school Head Teacher Mr Harilal Chooroomoonee. I was in charge for inspection of the schools run by the Arya Samajs in the districts of Rivière du Rempart and Flacq.

I remember having met Mr Madhub who was responsible to look after the Hindi teaching at the Bonne Mère Arya Samaj. He was very affectionate and took much interest for the proper running of the school and teaching of Hindi.

A lady teacher was teaching Hindi. I talked to her and gave any views on proper teaching methods. She too collaborated. I had done the end year examinations and later I personally went to the school to hand over the certificates.

Oh! I had missed. I had wished to be present in the centenary celebrations of the society which was held on 29 May 2017. But unfortunately, I was not aware of the celebrations. Nevertheless, I congratulate to all the members of the society and all those participants for having done their best to make the celebrations a successful and memorable event.

## Leave the Cattle Path & Take the Very Highway

Sookraj Bissessur, B.A.(Hons)

“Peace is its own reward.”

Mahatma Gandhi

“One should always do everything according to the dictates of dharma, i.e. after due reflection over right and wrong.”

5th Principle of Arya Samaj

In an era of instantaneous global communication through a variety of mass media and Information Communication Technology (ICT), people after reaching the moon are endeavouring to explore other planets. However, it is heart-rending to note that human society seems to be static and is not changing for the better. Family troubles and problems have more or less remained the same or perhaps are worsening gradually, despite guidance given through books, sermons, lectures and the entire social media.

The environment is changing, weather is changing (climate change), lifestyle is also changing, but man's mentality is not changing. In spite of high-tech, we are still primitive in mind and attitude as we continue to blindly and badly do a lot of things. Though more educated, more scientific, more logical and more rational, we suddenly become uneducated, unscientific, illogical and irrational, plunge in evil practices, superstitions, etc.

The darkness of ignorance overtakes our mind. We do not try to think, with a view to discard and dispel bad habits, vices, alcoholism, prostitution, superstitions, killing of innocent animals as mere offerings to Gods, witchcraft and obsolete beliefs, practices and principles of life.

Family scene

Domestic violence or family quarrels like the Mahaabhaarata is till ravaging the poor and rich alike. Adultery, child

pregnancy/unwanted pregnancy, abortions, rapes, atrocious crimes, murders, fraudulent sexual intercourse, suicide, huge family break-ups and high divorce rates are on the rampage.

Sacraments and ceremonies which should help people to improve character and make life better are followed by big parties in which people merely indulge in gulping strong intoxicating drinks, lustful activities, which stimulate them to adopt 'hedonism' that is pleasure is the chief good or the proper aim of life.

The social clock has stopped! There is no change for the better! There is no revolution for evolution! It seems we are still living in the Mahabharata period which destroyed both the Kaurāva and Pandāva dynasty, where lust, greed, gambling and family quarrels reign supreme.

We have not been able to successfully come out of that degrading situation despite our hard-earned knowledge and vast experience. We are living as if we inherited only vices, curses and evil practices, and we are paying a heavy price.

How long will such dark forces reign in the midst of our family? Is there no solution? If there is any, then why delay? Through knowledge, mutual understanding, insight, incentives, layers of experience and strong determination can we not improve our family life by shedding vices and evil practices? Are we going so flimsy and weak that we can't fulfill this dream?

Immediate Remedy / Solutions

A thorough study of Swami Dayanand's 'Magnum Opus', the Satyārtha Prakash (Light of Truth) offers real solutions to all the afore mentioned problems. Applying them in real life shall provide us with Human Dignity in life.

## Homage to Rama Chacha, the Sweeper

Vishwadeo Muni, Vanprasthi

May 1975: During the celebrations of the 80 years of the Arya Samaj in Hyderabad, Swami Satya Prakash Saraswati in his Presidential Address stated: “This is again an occasion of paying tribute to the service of our people who at their personal risks have worked against very odd circumstances and handicaps. Many of them have been silent workers in distant and remote corners in village and very small places. No historian is going to record their names and more would be paying them a homage. But the Arya Samaj has always been sustained by such dedicated workers.”

Vedic Dharma, nous dirige vers le désir (icchā), l'attachement et la haine (rāga-dvesha), l'effort (prayatna / purushārtha), le bonheur – le chagrin (sukha-dukha), les connaissances (jnāna).

En effet le Kathopanishad nous enseigne ce principe éternel qui découle des enseignements des Védas qui ont été transmis pendant des millénaires. Avec le temps ces savoirs ont été repris par d'autres et sont maintenant ancrés dans presque toutes les cultures.

Selon le Phaedrus dans « the allegory of the chariot », Plato (à travers son porte-parole Socrate) partage ces concepts qui de nos jours constituent le sommet de la sagesse.

(Phaedrus : la calèche)

Cela démontre la puissance de la sagesse Védique. Celui qui ne peut ou ne veut pas saisir, découvrir, assimiler et réaliser cette sagesse continuera à errer loin de la vérité, du droit chemin et le but de la vie humaine : dharma, artha, kāma, moksha (Yogi Bramdeo Mookoonall (... à suivre) Bibliographies : Katha Upanishad, Satyārtha Prakāsh, Nyāya Darshan; Photos: Internet



## ARYODAYE

Arya Sabha Mauritius

1, Maharshi Dayanand St., Port Louis,  
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,  
Email : aryamu@intnet.mu,  
www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,  
पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न  
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,  
बी.ए., ओ.एस.के., सी.एस.के., आर्य रत्न  
सम्पादक मण्डल :

- (१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, पी.एच.डी
- (२) श्री बालचन्द तानाकूर, पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न
- (३) श्री नरेन्द्र घूरा, पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण
- (४) प्रोफेसर सुदर्शन जगोसर, डी.एस.सी,  
जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण

(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, दर्शनार्थ  
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं।

Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.

मुख्य सम्पादक

Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD  
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,  
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

## पृष्ठ २ का शेष भाग

प्रति मास के अन्तिम शुक्रवार के सायंकाल चार बजे के लगभग हम जूटते हैं, और उसमें मूर्धन्य विद्वानों को आमन्त्रित कर उनके प्रवचन सुनते हैं। भजनोपदेश भी होता है। वरिष्ठ पुरोहित जीवन महादेव जी के निर्देशन में यज्ञ होता है। अतः हमारे ज्ञान की वृद्धि हेतु इस संगठन को कायम किया गया है।

इसके विकास का श्रेय श्रीमान् सोनालाल रामदोस जी को जाता है। इस प्रकार हम सबका निजी कर्तव्य बनता है, कि इस अग्नि को बुझने न दें। सभी अपने सहयोग द्वारा भाग लें। इससे हमारा प्रेम बढ़ेगा, मित्रता बढ़ेगी और जीवन सुधरेगा है। हमारा सन्देश रहेगा कि हर जगह या ज़िले के स्तर पर चार, पाँच, दस या अधिक समाज एक बार कहीं मिलें। इससे शक्ति बढ़ती है। वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा जागती है।

## La calèche et le cocher

On s'en sert toujours des mots pour élaborer ce qu'on ne peut déchiffrer dans d'autres mots au cours des conversations ou dans les écrits. Très souvent on a recours à des contes pour une meilleure présentation de ses idées. Les sages (rishis) nous ont donné une multitude d'analogies pour nous faciliter la tâche de se connecter aux valeurs de la vie qui nous permet de vivre la spiritualité (la réalité spirituelle).

Afin de saisir l'immortalité de l'âme (ātmā), Yamarāja (un sage qui maîtrisait le sujet) fait allusion à la calèche et le cocher afin que nous puissions bien faire la différence entre les entités distinctes : le corps, les sens (indriyas) et le sixième sens ou la conscience (antahkarana – l'esprit, l'intellect / le discernement, l'égo).

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।  
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥  
इन्द्रियाणि हयानाहुविषयांस्तेषु गोचरान्।  
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥

Atmānam rathinam viddhi shariram rathameva tu  
Buddhim tu sārathim viddhi manah pragahameva cha ॥  
Ātmendriyāmanoyuktam bhoktetyāhurmaneeṣiṇah ॥  
La calèche représente le corps  
Le propriétaire représente l'âme (ātmā)  
Le cocher représente l'intellect ou la raison (buddhi)

Les rênes représentent l'esprit (mana)  
Les chevaux représentent les organes sensoriels (indriyas – la langue, le nez, les yeux, les oreilles et la peau)  
Les sens (les sujets des organes sensoriels (Katha Upanishad & Geeta : la calèche) - le goûter, l'odorat, la vue, l'ouïe, et le toucher) représentent le chemin vers la jouissance des plaisirs mondains.

Le propriétaire, le cocher, les rênes, les chevaux, le chemin sont des choses différentes.

De même, le corps, l'âme, le cocher, la raison, l'esprit, les organes sensoriels et les sens sont des choses différentes.

En tant que maître l'âme agit en tant que chef suprême. Elle ordonne au cocher la destination voulue et le cocher n'a d'autre option que d'obéir. Ce dernier suit le droit chemin pour y arriver, point de zigzag. L'âme est la seule entité consciente dans ce corps et l'ordre exact mènera vers la transformation de l'homme en être humain... être spirituel et finalement au salut, la félicité éternelle ou la libération du cycle de la naissance et de la mort (moksha).

Cette image décrit la forme ou l'existence de l'âme qui est immortelle, éternelle, de nature inaltérable, séparée de notre corps. L'âme, selon le Sat Sanātan